संपादक का नोट

प्रभु की स्तुति हो। हमारे सभी प्रिय भाइयों और बहनों को हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के सबसे बहुमूल्य नाम से अभिवादन करती हूँ।

यशायाह 49:13 ''हे आकाश, जयजयकार कर, हे पृथ्वी, मगन हो; हे पहाड़ो, गला खोलकर जयजयकार करो! क्योंकि यहोवा ने अपनी प्रजा को शान्ति दी है और अपने दीन लोगों पर दया की है।''

यह हमारे लिए प्रभु का प्यार और दया है। सिर्फ इसलिए कि हम अपने जीवन में समस्याओं का सामना कर रहे हैं, हमें प्रभु से दूर नहीं जाना चाहिए, बल्कि हमें उनके साथ और भी करीब से चलना चाहिए। हमें उनके पवित्र नाम की और भी अधिक प्रशंसा करनी चाहिए।

पवित्र शास्त्र में, हमने देखा है कि एलीशा के जीवन में, उसने एलिय्याह से आशीषित शाल दो बार प्राप्त किया। क्या कारण है कि एलिय्याह की शाल उस पर दो बार गिरी? 1 राजाओं 19:19 ''तब वह वहाँ से चल दिया, और शापात का पुत्र एलीशा उसे मिला जो बारह जोड़ी बैल अपने आगे किए हुए स्वयं बारहवीं के साथ होकर हल जोत रहा था। उसके पास जाकर एलिय्याह ने अपनी चद्दर उस पर डाल दी।'' हम देखते हैं कि एलीशा अपने जीवन में एक बार एलिय्याह की शाल प्राप्त करने से संतुष्ट नहीं था। वह एक बार फिर एलिय्याह के शाल के लिए इच्छुक था। प्रभु ने अंत में आशीर्वाद दिया और एलीशा का दोगुना अभिषेक किया। हम जानते हैं कि दूसरी बार शाल प्राप्त करने के लिए एलीशा को अपने जीवनकाल में कितनी परेशानी का सामना करना पड़ा था। उसका विश्वास और भरोसा पूरी तरह से प्रभु में था। वह परमेश्वर से बहुत प्यार करता था और उनके राज्य के लिए काम करता था। एलीशा एक बार शाल प्राप्त करने के बाद चुप नहीं रहा, वह दूसरी बार भी यही चाहता था। उसने प्रभु के राज्य के लिए लगन से काम किया, प्रभु के लोगों के पीछे कड़ी मेहनत की और उनके लिए लगातार परिश्रम किया। कई सालों तक उसने इस शाल के लिए काम किया और कड़ी मेहनत की। अंत में शाल दूसरी बार स्वर्ग से उस पर गिरा, और उसे दोगुना अभिषेक प्राप्त हुआ।

हमारे निजी जीवन में भी, हम सभी अलग–अलग क्षेत्रों के लोग हैं, लेकिन प्रभु ने हम में से हर एक को अलग रूप से आशीर्वाद दिया है और हम में से प्रत्येक को अंधेरे से बाहर लाया है। प्रकाश में आने के बाद हमें क्या करना चाहिए? यहाँ तक कि मूसा और यहोशू ने परमेश्वर के अद्भुत कार्यों के बारे में गवाही दी कि वे दोनों ने अपने जीवन में अनुभव कर चुके हैं, हमें उन कार्यों की गवाही देनी चाहिए जो हमारे परमेश्वर ने हमारे जीवन में किए हैं। हर दिन अलग–अलग तरीकों से प्रभु हमारे प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित करते रहते है, वह हम

पर अपनी कृपा और दया की बौछार करते रहते है। इस प्रेम, अनुग्रह और दया का अनुभव करने के बाद हमें क्या करना चाहिए? हमें सिर्फ अनुभव करके और इस प्यार का लाभ उठाकर इसे भूलना नहीं चाहिए। बल्कि, एलीशा की तरह, हमें केवल एक बार शाल प्राप्त करने से संतुष्ट नहीं होना चाहिए, लेकिन हमें बार–बार इसके लिए प्रयास करना चाहिए और प्रभु ने हमें अपने जीवन में जो अद्‌भुत आशीर्वाद दिए है, उसके बारे में गवाही देते रहना चाहिए।

हमारा प्रभु जीवित है और जब हम सत्य को जानेंगे, तो सत्य हमें जीवन में स्वतंत्र करेगा। वह हमें हर पाप से अलग करेगा, वह हमारे और प्रभु के बीच के हर परदे को हटा देगा। केवल प्रभु ही जानते हैं कि दो बार शाल प्राप्त करने के लिए हमारे जीवन में क्या बाधा आ सकती है; प्रभु इस अड़चन को दूर करेंगे और हमें अच्छी बारिश का आशीर्वाद देंगे और हमें एलीशा की तरह दूसरों के लिए आशीर्वाद देने का एक पात्र बनाएंगे। यीशु ने कहा है यूहन्ना 8:32 ''तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।'' हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम अपने जीवन में प्रभु की उपस्थिति की सच्चाई को पहचानें। परमेश्वर मूसा, यहोशू, नबी एलिय्याह और एलीशा और उनके बारह शिष्यों के साथ थे; इसी तरह आज भी परमेश्वर हर समय हमारे साथ है।

प्रिय भाइयों और बहनों, कितना ही वर्तमान में आप जिन कठिन परिस्थितियों का सामना कर रहे हैं, आप परमेश्वर के वचनों को सुनना बंद न करें। जैसा कि रोमियों 10:17 कहता है, ''अतः विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है।'' इसलिए, परमेश्वर और यीशु के वचन को सुनने और मनन करने से आपका विश्वास बढ़ता रहेगा और यीशु आपको इन मुश्किल और कठिन समयों से लेकर जायेंगे जो केवल अस्थायी हैं, जैसा कि यीशु ने कहा है यूहन्ना 16:33 ''मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कहीं हैं कि तुम्हें मुझ में शान्ति मिले। संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बाँधो, मैं ने संसार को जीत लिया है।''

इसलिए अच्छे उत्साह में रहो और यीशु मसीह के साथ बनके रहो और केवल प्रभु ही हमें सुरक्षित रूप से मार्गदर्शन करेंगे।

जब तक हम फिर से मिलें तब तक, मसीह में आपकी बहन,

पास्टर सरोजा म।

प्रतीक्षा करें की दर्शन पूर्ण हो !

प्रेरितों के काम 2: 17 ''कि परमेश्वर कहता है, कि अन्त कि दिनों में ऐसा होगा, कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलूंगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरिनए स्वप्न देखेंगे।'' पुराने करार में हमने उन लोगों के बारे में पढ़ा है जिन लोगों को दर्शन मिला था। जबकि नए करार में लिखा है कि लोगों को दर्शन मिले और वे पूर्ण भी हुए। याद रखें कि हमेशा एक समय अंतराल होता है, जिसमें दर्शन देखा जाता है और दर्शन पूर्ण होते हैं। नबी हबक्कूक भी लिखते है हबक्कूक 2: 2–3 ''2 यहोवा ने मुझ से कहा, दर्शन की बातें लिख दे; वरन पटियाओं पर साफ साफ लिख दे कि दौड़ते हुए भी वे सहज से पढ़ी जाएं। 3 क्योंकि इस दर्शन की बात नियत समय में पूरी होने वाली है, वरन इसके पूरे होने का समय वेग से आता है; इस में धोखा न होगा। चाहे इस में विलम्ब भी हो, तौभी उसकी बाट जोहते रहना; क्योंकि वह निश्चय पूरी होगी और उस में देर न होगी।'' जब हबक्कूक को एक दर्शन दिखाया गया, तो परमेश्वर ने उसी दर्शन के लिए प्रार्थना करने और उस समय तक पूर्ण होने की प्रतीक्षा करने के लिए कहा। अगर हम युसूफ के जीवन की भी जांच करें, तो प्रभु ने उसे कई दर्शन दिए और यूसुफ ने इन सभी दर्शनों को अपने परिवार के साथ साझा किया। आइए हम पढ़ें उत्पत्ति 37: 7 ''हम लोग खेत में पूले बान्ध रहे हैं, और क्या देखता हूं कि मेरा पूला उठ कर सीधा खड़ा हो गया; तब तुम्हारे पूलों ने मेरे पूले को चारों तरफ से घेर लिया और उसे दण्डवत किया।'' इस दर्शन से पता चलता है कि प्रभु कैसे सांसारिक तरीके से यूसुफ को आशीर्वाद देंगे। आइए हम पढ़ें उत्पत्ति 37: 9 ''फिर उसने एक और स्वप्न देखा, और अपने भाइयों से उसका भी यों वर्णन किया, कि सुनो, मैं ने एक और स्वप्न देखा है, कि सूर्य और चन्द्रमा, और ग्यारह तारे मुझे दण्डवत कर रहे हैं।'' यह आत्मारिक आशीर्वाद का दर्शन था। यूसुफ को अपने परिवार के साथ साझा करने से पहले इन दर्शनों के पूर्ण होने के लिए इंतजार करना चाहिए था। लेकिन जब से यूसुफ ने अपने माता–पिता और भाइयों के साथ तुरंत दर्शन साझा किया, उनके बीच दुश्मनी पैदा हो गई और वे उसके बारे में ईर्ष्या करने लगे और उससे नाराज थे। यदि यूसुफ ने इन दर्शनों को साझा नहीं किया होता, तो उसे उन समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ता जो उसे वास्तव में जीवन में सामना करना पड़ा था।

आज भी, एक ही सत्य अच्छा है, यदि प्रभु प्रदर्शन देते हैं, तो हमें प्रभु पर प्रतीक्षा करनी चाहिए जब तक कि यह दर्शन हमारे जीवन में पूर्ण न हो जाए। हमें भी इसे किसी के सामने प्रकट नहीं करना चाहिए, बल्कि हमें इसके बारे में प्रार्थना करनी चाहिए। दर्शन को देखने और इसे पूर्ण होने के बीच का समय अंतराल एक महत्वपूर्ण समय है जिसे हमें नबी हबक्कूक द्वारा समझाया गया था की इंतजार करना चाहिए। परमेश्वर ने यूसुफ को पहले सांसारिक आशीषें दीं कि वह उस पर बरस पड़े और फिर परमेश्वर ने यूसुफ को वह

आत्मारिक आशीषें दीं जो उसके लिए होंगी। क्योंकि यूसुफ ने अपने परिवार के साथ दर्शन साझा किया था, इसलिए उसका परिवार उसके प्रति ईर्ष्या करता था और इस तरह उसके भाइयों ने उसे मारने की योजना बनाई। यहाँ, हम देखते हैं कि यूसुफ को तब तक प्रभु पर प्रतीक्षा करनी चाहिए थी जब तक कि उसके जीवन में दर्शन पूर्ण नहीं हो जाता। हमें भी प्रार्थना में प्रभु की प्रतीक्षा करना सीखना चाहिए, जब प्रभु हमें दर्शन देते है, तो हमें इस पृथ्वी पर अपने पापपूर्ण मार्ग पर जाने के बजाय प्रार्थना में हमेशा प्रतीक्षा करनी चाहिए। यह समय अंतराल प्रभु की दृष्टि में अनमोल हो जाता है और शत्रु भी हमें देख रहा होता है। इस प्रकार, दुश्मन से खुद को बचाने के लिए, जो हमारे ऊपर कई बाधाएं और लड़ाई, दुःख और दर्द लाएगा ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि हमारे जीवन में दर्शन पूर्ण न हो। जैसे यूसुफ को अपने परिवार के सदस्यों के साथ बहुत संघर्ष का सामना करना पड़ा था, शत्रु यूसुफ के जीवन में प्रभु के उद्देश्य को हराना चाहता था। लेकिन अंत में जीत प्रभु की ही हुई, प्रभु ने उसके सभी कष्टों और पीड़ाओं से जीत हासिल करवाई और प्रभु का वादा उसके जीवन में स्थापित और पूर्ण हुआ।

फिलिप्पियों 3: 14 ''निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूं, ताकि वह इनाम पाऊं, जिस के लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है।'' हमें पुरस्कार के लिए लक्ष्य की ओर दौड़ना चाहिए अर्थात् परमेश्वर की पुकार केवल यीशु मसीह के माध्यम स ही होती है। हमारा विश्वास, हमारी प्रार्थना को उस लक्ष्य की ओर केंद्रित किया जाना चाहिए जो हमारे सामने रखा गया है। आइए अब्राम के जीवन को देखें, प्रभु ने उसे भी एक दर्शन दिया था। अब्राम ने अपनी पत्नी सारा के साथ इस दर्शन को साझा किया, दोनों ने इसे स्वीकार किया और इस पर डटे रहे और इस दर्शन के लिए प्रभु पर प्रतीक्षा करने लगे कि वे उनके जीवन में पूर्ण हो। सारा ने कभी भी उस समय के बारे में गुरगुरावट या बड़बड़ाया नहीं जब तक कि यह दर्शन पूर्ण न हो गया। आइए हम पढ़ें उत्पत्ति 12: 1–2 ''यहोवा ने अब्राम से कहा, अपने देश, और अपनी जन्मभूमि, और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा। 2 और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊंगा, और तुझे आशीष दूंगा, और तेरा नाम बड़ा करूंगा, और तू आशीष का मूल होगा।'' अब्राहम के लिए प्रभु का दर्शन यह था कि वह ''उसे एक महान जाती बनाएगा, उसे आशीर्वाद देगा, उसका नाम महान बनाएगा और उसे आशीषवान बनाएगा''। यह दर्शन अब्राम को दिया गया था, यहाँ तक कि सारा उसकी साथी ने भी उसका अनुसरण किया और उस पर विश्वास किया। बाइबल में, हम कई महिलाओं को जानते हैं जो प्रभु परमेश्वर के साथ दृढ़ता से थे, उन्होंने अच्छे काम किए और साथ ही साथ कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने बुराई भी की। उदाहरण के लिए, अच्छी स्त्रियों में नाबाल की पत्नी थी जिसने बहुत अच्छा किया, जबकि अय्यूब की पत्नी ने बुराई की। लेकिन यहाँ इस दृष्टांत में हम देखते हैं कि सारा अपने पति अब्राम द्वारा तब तक खड़ी रही जब तक कि उनके जीवन में दर्शन पूर्ण न हो गया। यह उसका विश्वास था। बाद में, उनके जीवन में हम देखते हैं कि लूत और उनका परिवार भी अब्राम से जुड़ गया जब वे प्रभु की इच्छा के अनुसार अलग हो गया। यह दर्शन अब्राम का था, इसलिए लूत इस दर्शन का एक हिस्सा बन गया था लेकिन यह केवल कुछ समय के लिये था। लूत को अपने जीवन में अब्राम को बीच में ही छोड़ना पड़ा। हमारे लिए यह जानना बहुत महत्वपूर्ण है कि जब कोई दर्शन नहीं होता है, तो हम उन लोगों का हिस्सा नहीं बन सकते हैं, जिनके लिए प्रभु ने दर्शन दिया है, वे लंबे समय तक उन लोगों के साथ नहीं रहेंगे जिनके लिए दर्शन बताया गया था। उन्हें रस्ते के बीच में से ही छोड़ना पड़ेगा। 'दर्शन' प्रभु का एक महान आशीर्वाद है, जब किसी एक को दर्शन प्राप्त होता है वह प्रभु का अनुग्रह, दया और करुणा प्राप्त करता है। वे वास्तव में धन्य हैं। लेकिन वे जिन्होंने दर्शन नहीं

देखा है, वे मध्य मार्ग में ही छोड़ देते हैं, जैसे कि अब्राहम और लूत के अलग होने का समय था, लूत ने सांसारिक तरीके से अपनी आंखों में जो कुछ भी अच्छा था, उसे चुना, इस तरह सदोम और अमोरा जो विनाश होने वाला था उस शहर को चुना। अब्राम और सारा अंत तक प्रभु के साथ दृढ़ता से रहे, ताकि दर्शन पूर्ण हो जाए।

परमेश्वर ने अब्राम से एक वादा किया था, आइए हम पढ़ें उत्पत्ति 17: 4–5 ''4 देख, मेरी वाचा तेरे साथ बन्धी रहेगी, इसलिये तू जातियों के समूह का मूलपिता हो जाएगा। 5 सो अब से तेरा नाम अब्राम न रहेगा परन्तु तेरा नाम इब्राहीम होगा क्योंकि मैं ने तुझे जातियों के समूह का मूलपिता ठहरा दिया है।'' परमेश्वर ने पहले अब्राम को एक दर्शन दिया, फिर परमेश्वर ने उसे एक वचन दिया। सारा को दर्शन में विश्वास था और वादे में भी, जब तक वह पूरा नहीं हुआ। हम यह भी जानते हैं कि हाजिरा भी उनके जीवन में आई थी। फिर से, क्योंकि हाजिरा दर्शन और वचन का हिस्सा नहीं थी कि प्रभु ने अब्राम को दिया था, इसलिए उसे भी बीच में ही रास्ता अलग करना पड़ा। अंत में केवल अब्राम और सारा ही थे जो प्रभु के साथ दृढ़ता से रहे, प्रभु के दर्शन को अपने जीवन में पूरा होते हुए देखने के लिए, अंत तक विश्वास में रहे। इब्रानियों 11: 12 ''इस कारण एक ही जन से जो मरा हुआ सा था, आकाश के तारों और समुद्र के तीर के बालू की नाईं, अनगिनित वंश उत्पन्न हुआ।'' यह विश्वास ही था कि अब्राम और सारा परमेश्वर के वादे के साथ खड़े थे। एक दर्शन प्राप्त करना और उसे पूर्ण हाने देना, उसके बीच का समय बहुत महत्वपूर्ण है। यह समय प्रभु से प्रार्थना पर प्रतीक्षा करने का है। सारा का गर्भ मर चुका था और अब्राम अपने पूर्ण बुढ़ापे में था, लेकिन वे फिर भी प्रभु के साथ जुड़े हुए थे और उन्होंने विश्वास में दर्शन के लिए प्रार्थना की और प्रभु ने उन्हें देने का वादा किया। इस प्रकार, जैसा कि वचन कहता है ''अब्राम कई जातियों का पिता बन गया है'', प्रभु के वादे और दर्शन सच हैं, और हमेशा के लिए हैं। वे कभी जमीन पर नहीं गिरेंगे। लेकिन यह हमारा कर्तव्य है कि जब तक ये वादे पूरे नहीं हो जाते, तब तक प्रार्थनाओं में प्रभु से जुड़े रहे। जैसा कि हमने युसूफ की कहानी में देखा है, उसे अपने जीवन में दर्शन पूर्ण होने के लिए 30 साल इंतजार करना पड़ा। इसी तरह, अब्राम और सारा को भी दर्शन और वादे को पूर्ण होने के लिए कई वर्षों तक इंतजार करना पड़ा। हमें भी सब्र से प्रभु की प्रतीक्षा करनी चाहिए, प्रभु द्वारा हमें दिया गया वादा और वचन हमारे जीवन में पूरा होने के लिए यह दिन, महीने, वर्ष, दशकों के लिए भी हो सकता है। लेकिन हमें प्रार्थना और विश्वास के साथ प्रभु के साथ जुड़े रहना चाहिए।

मुख्य वचन है की 'हमें प्रभु पर इंतजार करना चाहिए क्योंकि उनका समय सही समय है' ताकि उनके वादे हमारे जीवन में पूरे हों। मैंने पास्टर बनने के लिए 10 साल इंतजार किया और 9 साल पहले मैं प्रभु के पवित्र मंदिर में वचन का प्रचार करने के लिए आगे आई। प्रभु ने मुझ से बात की, मुझे दर्शन और रहस्योद्घाटन दिए, लेकिन फिर भी मैंने प्रभु पर विश्वास में धैर्यपूर्वक इंतजार किया, इससे पहले कि मैं उनकी महिमा के लिए उपयोगी हो सकूँ। यह हम में से हर एक के लिए समान है, जब हमें दर्शन और वादे दिए जाते हैं, हम तभी सफल होंगे जब हम धैर्यपूर्वक उनके और उनके समय का इंतजार करते हैं ताकि हमारे जीवन में उनकी इच्छा पूर्ण हो सके। हमें प्रभु के साथ एकता में प्रतीक्षा करनी चाहिए, वह एक न बदलनेवाला प्रभु है, उनके वादे और वचन कभी नहीं बदलेंगे या जमीन पर नहीं गिरेंगे। वचन कहता है ''स्वर्ग और पृथ्वी टल जाएगा, लेकिन परमेश्वर का वचन कभी जमीन पर नहीं गिरेगा''। रोमियों 4: 19–21 ''19 और वह जो एक सौ वर्ष का था, अपने मरे हुए से शरीर और सारा के गर्भ की मरी हुई की सी दशा जानकर भी विश्वास में निर्बल न

हुआ। 20 और न अविश्वासी होकर परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर संदेह किया, पर विश्वास में दृढ़ होकर परमेश्वर की महिमा की। 21 और निश्चय जाना, कि जिस बात की उस ने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरी करने को भी सामर्थी है।'' दर्शन को देखने के अंतराल के दौरान और इसे पूर्ण करने के लिए, अब्राम और सारा ने परमेश्वर की स्तुति और आराधना करना जारी रखा और उसके समय और विश्वास के लिए उसकी प्रतीक्षा की। वे जानते हैं कि जिस प्रभु ने अब्राम को एक दर्शन दिया है, वह 'सच्चा प्रभु' है, वह 'जीवित प्रभु' भी है। इस प्रकार, उन्होंने लगातार उनकी प्रशंसा की और उनकी आराधना की और इसलिए उनके शरीर में कमजोरी महसूस नहीं हुई। अपने बुढ़ापे तक पहुँचने के बाद भी, उन्होंने अपने शरीर में कमजोरी के बारे में कभी भी आशंका नहीं जताई और वे कभी दुखी नहीं हुए। हमारे जीवन में भी जब हम उन दर्शनों और वादों को भूल जाते हैं जो प्रभु ने हमें दिए हैं, हम थके हुए और घबराये हुए महसूस करने लगते हैं। हम जीवन से डरने लगते हैं और कमजोर हो जाते हैं। लेकिन यहां हम वचन 19 में देखते हैं ''19 और वह जो एक सौ वर्ष का था, अपने मरे हुए से शरीर और सारा के गर्भ की मरी हुई की सी दशा जानकर भी विश्वास में निर्बल न हुआ।'' अब्राम अपने शरीर के कमजोर और मृत होने के साथ बूढ़ा हो गया था और सारा का गर्भ मर चुका था, फिर भी दर्शन को देखने और इसे पूरा करने के बीच का समय था, उन्होंने केवल प्रशंसा की और प्रार्थना की और विश्वास में प्रभु की प्रतीक्षा की। नबी हबक्कूक कहता है 2: 2–3 ''2 यहोवा ने मुझ से कहा, दर्शन की बातें लिख दे; वरन पटियाओं पर साफ साफ लिख दे कि दौड़ते हुए भी वे सहज से पढ़ी जाएं। 3 क्योंकि इस दर्शन की बात नियत समय में पूरी होने वाली है, वरन इसके पूरे होने का समय वेग से आता है; इस में धोखा न होगा। चाहे इस में विलम्ब भी हो, तौभी उसकी बाट जोहते रहना; क्योंकि वह निश्चय पूरी होगी और उस में देर न होगी।'' हमें प्रभु का दिया हुआ वचन याद रखना चाहिए, फिर हम कभी भी थके हुए और कमजोर नहीं होंगे, हम कभी भी दुखी नहीं होंगे और दर्द में नहीं रहेंगे, हम अपनी उम्र और बुढ़ापे की कमजोरी को भूल जाएंगे। जब परमेश्वर का प्यार हमारे दिलों में है और उनका डर हमारे जीवन में है, तो हम कभी निराश नहीं होंगे या कमजोर नहीं होंगे। प्रभु के लिए हमारी इच्छा केवल अधिक से अधिक बढ़ेगी। जहां दो या तीन प्रभु के नाम पर इकट्ठा होते हैं, उन्हें कभी भी उस स्थान पर किसी चीज की कमी नहीं होगी, और जब प्रार्थना की जाएगी तो इसका जवाब दिया जाएगा।

अब्राम और सारा ने इन नबी और बुद्धिमान लोगों द्वारा बोले गए प्रत्येक वचन को याद किया और इस प्रकार उन्होंने केवल प्रभु की प्रशंसा और महिमा की। दानिय्येल 12: 3 ''तब सिखाने वालों की चमक आकाशमण्डल की सी होगी, और जो बहुतों को धर्मी बनाते हैं, वे सर्वदा की नाईं प्रकाशमान रहेंगे।'' जैसा कि नबी यशायाह ने बात की थी यशायाह 8: 18 ''देख, मैं और जो लड़के यहोवा ने मुझे सौंपे हैं, उसी सेनाओं के यहोवा की ओर से जो सिय्योन पर्वत पर निवास किए रहता है इस्राएलियों के लिये चिन्ह और चमत्कार हैं।'' ये वे वचन हैं, जिन्हें अब्राम और सारा ने याद किया और प्रभु से प्रार्थना की और प्रभु के साथ जुड़े रहे। उनका मानना था कि प्रभु के दर्शन और वचन हमारे जीवन में पूर्ण होंगे और उनके विश्वास को बढ़ता रहा।

आइए देखें कि यहोशू ने क्या कहा यहोशू 24: 15 ''और यदि यहोवा की सेवा करनी तुम्हें बुरी लगे, तो आज चुन लो कि तुम किस की सेवा करोगे, चाहे उन देवताओं की जिनकी सेवा तुम्हारे पुरखा महानद के उस पार करते थे, और चाहे एमोरियों के देवताओं की सेवा करो जिनके देश में तुम रहते हो; परन्तु मैं तो अपने घराने समेत यहोवा की सेवा नित करूंगा।'' यहोशू ने यह तय किया कि वे मिस्र में पीछे छोड़े हुए देवता के पास

कभी भी नहीं जायेंगे, लेकिन वे और उसका परिवार जीवित प्रभु की सेवा और आराधना करने के लिए विश्वास में रहेंगे। मिस्र में 330 से अधिक वर्षों के लिए इस्राएल बंधनों में थे, वे वहां गुलाम थे। लेकिन, परमेश्वर ने उन्हें एक वादा दिया निर्गमन 3: 8 ''इसलिए अब मैं उतर आया हूं कि उन्हें मिस्रियोंके वश से छुड़ाऊं, और उस देश से निकालकर एक अच्छे और बड़े देश में जिस में दूध और मधु की धारा बहती है, अर्थात कनानी, हित्ती, एमोरी, परिज्जी, हिव्वी, और यबूसी लोगोंके स्यान में पहुंचाऊं।'' इस वादे को पूरा करने के लिए, इस्राएली 40 साल तक जंगल में भटकते रहे। यहां हम देखते हैं कि दर्शन और दर्शन की पूर्ति के बीच 40 साल के समय का अंतराल था। इसलिए इन 40 वर्षों में, परमेश्वर बादल और आग के खंम्बे के रूप में इस्राएलियों के साथ थे। परमेश्वर ने जंगल में उनकी बहुत देखभाल की। यहाँ भी हम देखते हैं कि इस्राएलियों को शांत रहना चाहिए था और विश्वास, प्रार्थना और प्रभु की आराधना जारी रखना चाहिए था। इसके बजाय, उन्होंने कुड़कुड़ाया/बड़बड़ाया और प्रभु को परीक्षा में डाल दिया। इस प्रकार उनमें से कई जंगल में ही नष्ट हो गए। परमेश्वर ने इस्राएलियों से अपना वादा पूरा करने में 40 साल लगा दिए। हमें भी कभी भी प्रभु के दिए गए वादे पर विश्वास नहीं करना चाहिए और न ही इस्राइलियों की तरह बड़बड़ाना और कुड़कुड़ाना चाहिए। हमारे परिवारों में, जब कोई वादा हमें दिया जाता है, तो हमें आज्ञाकारी रूप से प्रभु पर विश्वास में इंतजार करना चाहिए और भरोसा करना चाहिए कि यह पूर्ण होगा। हमें इस वचन के लिए अपने परमेश्वर की स्तुति और आराधना करते रहना चाहिए। दाऊद कहता है भजन संहिता 23 : 6 ''निश्चय भलाई और करूणा जीवन भर मेरे साथ साथ बनी रहेंगी; और मैं यहोवा के धाम में सर्वदा वास करूंगा। यह दाऊद का विश्वास है, कि ''वह प्रभु के घर में हमेशा के लिए निवास करेगा''। हमारे जीवन में भी हमें वही विश्वास होना चाहिए, हमारा प्रभु जीवित है और वह एक सच्चा प्रभु है। हमारे प्रभु ने हमारे लिए अपना जीवन दे दिया, इससे हम जानते हैं कि वह हमसे कितना प्यार करता था।

यूहन्ना 10 : 9 ''द्वार मैं हूं: यदि कोई मेरे द्वारा भीतर प्रवेश करे तो उद्धार पाएगा और भीतर बाहर आया जाया करेगा और चारा पाएगा।'' यीशु द्वार है, अगर हम उनकी ओर से जायेंगे तो ही हमें मुक्ति मिलेगी। प्रभु यीशु मसीह ही उद्धार का एकमात्र मार्ग है। वह हमारा प्रभु है जो स्वर्ग से धरती पर हमारे खातिर उतर आया। वह 'मार्ग, सत्य और जीवन' है। यह वही विश्वास है जो दाऊद के पास था, हम ने भजन संहिता 23: 6 में पढ़ा हैं। बिना प्रभु यीशु मसीह के और कोई रास्ता नहीं है। 1 कुरिन्थियों 11: 1 ''तुम मेरी सी चाल चलो जैसा मैं मसीह की सी चाल चलता हूं।'' प्रेरित पौलुस कहता हैं, ''यीशु मसीह एकमात्र मार्ग है, जिस तरह मैं इस मार्ग पर चलता हूँ, उसी तरह आप भी इसी तरह से अनुसरण करे।'' उद्धार प्राप्त करने के लिए कोई छोटा रास्ता नहीं है। हम प्रेरित पौलुस के जीवन को जानते हैं जब वह शाऊल था। वह एक उपद्रवी व्यक्ति था और उसने उन लोगों को सताया जो मसीह यीशु का अनुसरण करते थे। वह पवित्र मंदिर को तोड़ने और मंडलियों को विभाजित करने के लिए जिम्मेदार था। लेकिन अंत में, उसने सच्चाई सीखी और परमेश्वर ने उसे पकड़ लिया। विज्ञान और धर्म हमेशा एक दूसरे के विपरीत होते हैं। प्रभु ने मनुष्य को अपनी छवि में बनाया, लेकिन विज्ञान कहता है कि मनुष्य बंदर से विकसित हुआ है। हमने पढ़ा होगा अखबार में कि 'आदम और हव्वा एक जोड़े नहीं थे। उनके पास परिवार नहीं था।' यह विज्ञान फिर से परमेश्वर के रचना के विरोध कहता है जो की परमेश्वर की पहली रचना पुरुष और महिला यानी आदम ओर हव्वा है। इसलिए, शत्रु हमेशा परमेश्वर के वचन के खिलाफ होगा और लोगों के मन में भ्रम लाएगा। जब लूसिफ़ेर ने सोचा कि वह प्रभु से बड़ा बनना चाहता है, प्रभु ने उसे लात मारकर पृथ्वी पर गिरा दिया और आज वह इस पृथ्वी पर शासन करता है। याद

रखें, जीत हमेशा प्रभु की ही होती है। हम 'बाबुल का मीनार' इसकी कहानी भी जानते हैं। लोग स्वर्ग तक पहुँचने के लिए सबसे ऊँची मीनार का निर्माण करना चाहते थे, लेकिन हम जानते हैं कि परमेश्वर कभी भी किसी भी मनुष्य को अपनी महिमा नहीं देंगे। उन्होंने इस धरती पर आकर सबकी भाषा बदल दी और मीनार बनाने की उनकी योजना को तोड़ दिया। हम जानते हैं कि जिसने विशाल और सबसे परिष्कृत 'टाइटैनिक जहाज' बनाया था, उसने कभी नहीं सोचा था कि यह अपनी पहली यात्रा के दौरान ही डूब जाएगा। याद रखें, कोई भी व्यक्ति प्रभु को चुनौती नहीं दे सकता है और न ही उनकी महिमा ले सकता है। सच्चाई यह है कि 'मनुष्य प्रभु के बिना कुछ नहीं कर सकता है।' आइए हम फिर से पढ़ें 1 कुरिन्थियों 11: 1 ''तुम मेरी सी चाल चलो जैसा मैं मसीह की सी चाल चलता हूं।''

यशायाह 51 : 1 ''हे धर्म पर चलने वालो, हे यहोवा के ढूंढ़ने वालो, कान लगाकर मेरी सुनो; जिस चट्टान में से तुम खोदे गए और जिस खानि में से तुम निकाले गए, उस पर ध्यान करो।'' हमारे प्रभु ने प्रत्येक को एक गड्ढे से, विभिन्न रूपों में उठाया है। इस प्रकार हमें उस पत्थर को कभी नहीं भूलना चाहिए जिससे हम कटाकर गिराय हुए थे या जिस गड्ढे से हमें उठाया गया था। जब तक प्रभु के दर्शन और वचन हमारे जीवन में पूरे नहीं हो जाते, हमें इन वचनों को याद रखना चाहिए। अब्राम और सारा की तरह, हमें भी प्रभु के साथ जुड़ना चाहिए, क्योंकि प्रभु के बिना हमारे लिए दिया हुआ वादा पूरा नहीं हो सकता । भजन संहिता 138: 7 कहता है ''चाहे मैं संकट के बीच में रहूं तौभी तू मुझे जिलाएगा, तू मेरे क्रोधित शत्रुओं के विरुद्ध हाथ बढ़ाएगा, और अपने दाहिने हाथ से मेरा उद्धार करेगा।'' जब हम परमेश्वर के साथ जुड़ेंगे तो हम साहसपूर्वक कहेंगे कि ''यद्यपि मैं संकट के बीच में चालू, प्रभु मुझे पुनर्जीवित करेंगे और मुझे उसके दाहिने हाथ से पकड़ कर मुझे बचाएंगे''। प्रभु हमेशा हमारी खातिर दुश्मन से लड़ेंगे और अपने दाहिने हाथ से वह हमें आशीर्वाद देंगे और हमें मुक्ति दिलाएंगे। आइए हम पढ़ें रोमियों 8: 11 ''और यदि उसी का आत्मा जिस ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया तुम में बसा हुआ है; तो जिस ने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारी मरनहार देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है जिलाएगा।'' जब हम अपने आप को प्रभु से जोड़े रखते हैं, तो हम प्रभु को अपनी धार्मिकता से खुश करते हैं, और हम कभी भी पराजित नहीं होंगे। प्रभु हमारा ख्याल रखेंगे। हमारे जीवन की सबसे खराब स्थिति में, प्रभु हमारी देखभाल करेंगे। इफिसियों 2: 5 ''जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो हमें मसीह के साथ जिलाया; (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है।)'' हम जो हमारे पापों में मरे थे, प्रभु ने हमें उनके अनुग्रह और दया के साथ जीवन दिया है। आज, हमें अपने पापों से केवल उनकी क्षमा द्वारा दिया गया है। उद्धार हमारे लिए प्रभु का एक उपहार है। इस प्रकार, हम पिता / पुत्र, पिता / पुत्री, एक मित्र के रूप में उसके साथ सहभागी हो सकते हैं। परमेश्वर हमें पाप की मृत्यु से मुक्ति दिला सकते है, आइए हम अपने जीवन को उनके हाथों में सौंप दें। जब परमेश्वर हमें उद्धार देते है, तो कोई भी इसे हमसे दूर नहीं कर सकता है। आइए हम पढ़ें यहेजकेल 37: 3 ''तब उसने मुझ से पूछा, हे मनुष्य के सन्तान, क्या ये हड्डियां जी सकती हैं? मैं ने कहा, हे परमेश्वर यहोवा, तू ही जानता है।'' एक बार यहेजकेल पर प्रभु का हाथ था और यहेजकेल से प्रभु ने बात की थी। प्रभु ने भी उसे दिखाया, कैसे मृत जीवन को पुनर्जीवित किया जा सकता है। आइए हम पढ़ें यहेजकेल 37: 6 ''और मैं तुम्हारी नसें उपजा कर मांस चढ़ाऊंगा, और तुम को चमड़े से ढांपूंगा; और तुम में सांस समवाऊंगा और तुम जी जाओगी; और तुम जान लोगी कि मैं यहोवा हूँ।'' परमेश्वर ने यहेजकेल को दिखाया कि कैसे सूखी हुई हड्डियों को मांस से भरा जा सकता है और एक बार फिर से जीवित किया जा सकता है। हम यहाँ देखते हैं कि परमेश्वर ने जो दर्शन

यहेजकेल को दिया था वह इस्राएलियों के लिए था। उनका जीवन सूखी हड्डियों की तरह था और प्रभु उन्हें फिर से कैसे जीवित करेंगे। आइए हम पढ़ें यहेजकेल 37: 12 ''इस कारण भविष्यद्वाणी कर के उन से कह, परमेश्वर यहोवा यों कहता है, हे मेरी प्रजा के लोगो, देखो, मैं तुम्हारी कबरें खोल कर तुम को उन से निकालूंगा, और इस्राएल के देश में पहुंचा दूंगा।'' परमेश्वर का वचन हमें जीवन देता है। भजन संहिता 119 : 25 ''मैं धूल में पड़ा हूं; तू अपने वचन के अनुसार मुझ को जिला!'' जब हमारा जीवन पापमय होता है, तो हमारा जीवन मांस रहित सूखी हड्डियों के समान होता है। हम धूल की तरह हैं। लेकिन, प्रभु का वचन हमें एक बार फिर से जीवित कर सकता है। आइए हम पढ़ें यूहन्ना 6: 63 ''आत्मा तो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं: जो बातें मैं ने तुम से कहीं हैं वे आत्मा है, और जीवन भी हैं।'' हालाँकि कितना ही अधिक आज हमारा पाप हो या हमारा पापी जीवन हो, परमेश्वर हमारे मृत जीवन को पुनर्जीवित कर सकते है। वह सूखी हड्डियों को भी जीवन दे सकते है और हमारे विश्वास को मजबूत कर सकते है। परमेश्वर के वचन में सामर्थ है। आइए हम पढ़ें रोमियों 4: 19– 21 ''19 और वह जो एक सौ वर्ष का था, अपने मरे हुए से शरीर और सारा के गर्भ की मरी हुई की सी दशा जानकर भी विश्वास में निर्बल न हुआ। 20 और न अविश्वासी होकर परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर संदेह किया, पर विश्वास में दृढ़ होकर परमेश्वर की महिमा की। 21 और निश्चय जाना, कि जिस बात की उस ने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरी करने को भी सामर्थी है।'' हम प्रभु में जितना विश्वास करते हैं, हमारा विश्वास उतना ही मजबूत होता है। भजन संहिता 71: 20 ''तू ने तो हम को बहुत से कठिन कष्ट दिखाए हैं परन्तु अब तू फिर से हम को जिलाएगा; और पृथ्वी के गहिरे गड़हे में से उबार लेगा।'' दाऊद का प्रभु पर भरोसा, उसे उसकी हर लड़ाई में जीत हासिल हुई। जब हम परमेश्वर की स्तुति और महिमा करना जारी रखेंगे, तो वह हमें हमारी सभी परेशानियों से ऊपर उठाएंगे। आइए हम भजन संहिता से पढ़ते हैं और अपने विश्वास को एक बार फिर से मज़बूत करते है – भजन संहिता 119 : 40 / 50 / 93 ''40 देख, मैं तेरे उपदेशों का अभिलाषी हूं; अपने धर्म के कारण मुझ को जिला। / 50 मेरे दुःख में मुझे शान्ति उसी से हुई है, क्योंकि तेरे वचन के द्वारा मैं ने जीवन पाया है। / 93 मैं तेरे उपदेशों को कभी न भूलूंगा; क्योंकि उन्हीं के द्वारा तू ने मुझे जिलाया है।''

यह संदेश हम में से प्रत्येक के लिए आशीर्वाद लाए , प्रभु की स्तुति हो !

पास्टर सरोजा म।